प्रेस विज्ञप्ति 18-12-14

जो आनन्द भारतीय संस्कृति में है, वो सारे विश्व में नही है- विजय सांपला

ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर में राष्ट्रीय एकता शिविर का समापन

भारतीय संस्कृति को बचाये रखने के लिए हमें हिन्दी को प्राथमिक भाषा के रूप में अपनाना बहुत जरूरी है, मैं विश्व के अनेक देशों में जा चुका हूँ, मुझे काफी भाषायें आती हैं लेकिन जो आनन्द अपनी भाषा और अपनी संस्कृति में है, वो विश्व में कहीं नही मिला। उक्त विचार **विजय सांपला जी, माननीय राज्यमंत्री, सामाजिक न्याय एवं अधिकार, भारत सरकार ने गुड़गाँव**, ब्रह्माकुमारीज़ के बहोड़ाकलां स्थित ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर में केन्द्र सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय के द्वारा देश के युवाओं के लिए 7 दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर के समापन सत्र में व्यक्त किये। उन्होने कहा कि आज ज्यादातर माता-पिता यही चाहते हैं कि उनके बच्चे बड़े से बड़े विद्यालय में पढ़ें, सरकारी स्कूल में कोई पढ़ाना नही चाहता। बड़े स्कूल, कॉलेज में पढ़ने से वो अधिक पैसा कमा सकते हैं लेकिन पैसों से श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण नही होता। उन्होने कहा कि आज बहुत ही निराशा की बात है, कि हम अनेक प्रकार की शिक्षा तो प्रदान कर रहे हैं परन्तु इन्सान को बेहतर इन्सान बनाने के लिए कहीं कोई शिक्षा नही दी जाती। आज अगर किसी पति-पत्नि का आपस में झगड़ा हो जाता है तो उन्हें यही सिखाया जाता है, कि एक-दूसरे को किस-2 धारा के तहत फँसाएं, सम्बन्धों को बेहतर कैसे बनाएं ये नही सिखाया जाता। ब्रह्माकुमारीज़ एक ऐसी संस्था है जो सही अर्थों में जीवन को बेहतर बनाने व आपसी सम्बन्धों को अच्छा बनाने की दिशा में लोगों को शिक्षित कर रही है। मैं स्वयं कोई ज्यादा पढ़ा हुआ नही हूँ लेकिन मैंने जीवन में अपने बड़ों से बहुत कुछ ऐसा सीखा है जो आज की शिक्षा-पद्धति में नहीं है। मुझे अपने ज्यादा पढ़े-लिखे न होने पर खुशी होती है। उन्होने कहा कि मैंने काफी वर्षों तक सऊदी अरब में एक मजदूर के रूप में भी कार्य किया। जब वहाँ के लोगों को पता चला कि मैं मंत्री बन गया तो वो मेरे से पूछने लगे कि आपको कैसा लग रहा है, मैंने यही कहा कि ये तो भारत के लोकतंत्र की ही ताक़त है जहाँ कोई मजदूर भी मंत्री बन सकता है। स्वामी विवेकानन्द, डा॰ भीमराव अम्बेडकर, लाल बहादुर शास्त्री और इब्राहिम लिंकन इन चारों को मैंने अपना प्रेरणा स्रोत माना है।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य-सचिव ब्र॰ कु॰ ब्रजमोहन जी ने कहा कि युवा ही हमारे देश का भविष्य है, हमारा युवा जैसा होगा वैसा ही समाज बनेगा। उन्होने कहा कि हमारी शिक्षा एक डाक्टर, इंजीनियर व वकील तो बना सकती है लेकिन एक बेहतर इन्सान नही बना सकती जिसका परिणाम आज भ्रष्टाचार के रूप में हमारे सामने आ रहा है। उन्होने कहा कि व्यक्ति चरित्र से ही महान बनता है। विवेकानन्द जब अमेरिका में गये तो उनके साधारण वेशभूषा को देख वहाँ के कुछ नवयुवक हँस रहे थे। विवेकानन्दजी ने उन्हें यही कहा कि आपके यहाँ व्यक्तित्व का निर्माण एक दर्जी करता है लेकिन भारत में व्यक्त्वि की पहचान चरित्र से होती है। उन्होने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के श्रेष्ठ चरित्र का प्रभाव ही तो है जो आज सारे विश्व की राजनीति पर पड़ रहा है। जीवन में हम सदा दातापन की भावना रखें। देना सिर्फ धन का ही नही होता, दूसरों

को सम्मान, अच्छे विचार एवं सहयोग दें। जितना हम दूसरों को देतें हैं उतना हमारा जीवन खुशहाल बनता है, दुआएं मिलती हैं।

ओआरसी की संयुक्त निदेशिका ब्र० कु० गीता ने अपने आर्शीवचन में कहा कि जीवन में एक श्रेष्ठ लक्ष्य होना जरूरी है, जैसा लक्ष्य होता है वैसे ही लक्षण स्वत: आते हैं। आप सब युवा इस देश के कर्णधार हैं, आपको ऐसे कार्य करने हैं जिससे देश का नाम ऊँचा हो। आपने इतने दिनों तक यहाँ पर जो भी सीखा है, उसे अपने जीवन में जरूर आत्मसात् करें। आपके जीवन से सबको नजर आए कि इनमें बहुत परिवर्तन आ गया, उन्हें भी आपसे प्रेरणा मिले, क्योंकि जैसा संग वैसा रंग अवश्य ही लगता है। **ओआरसी की राजयोग प्रशिक्षिका ब्र० कु० रजनी** ने सभी को राजयोग की गहन अनुभूति कराई।

कार्यक्रम में आये हुए युवाओं को माननीय मंत्री जी ने अपने हस्तों से प्रमाण-पत्र प्रदान किये। गीता दीदी जी ने सभी को प्रभु प्रसाद एंव सौगात दी। **कार्यक्रम का संचालन ब्र० कु० रंजना** ने किया।